समेकित अधिगम से अभ्युदय
Holistic Learning for Sustainable Progress

डॉ. एच. एल. शर्मा
पूर्व-प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी.
उपाध्यक्ष, लोक विज्ञान परिषद
Dr H. L. Sharma
Ex- Professor, NCERT
Email : drhlsharma@yahoo.com

सारांश

नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क-2000 (NCERT) ने परम्परा से चले आ रहे पाठ्यक्रम के स्थान पर नए समेकित पाठ्यक्रम की सिफारिश की । परम्परागत अधिगम विषय-केन्द्रित रहते हुए केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित रहता है । लेकिन विषय संकल्पना समाज, पड़ोस और प्रकृति में दूसरी कई संकल्पनाओं से भी प्रभावित होता है, नेटवर्क में उनसे भी जुड़ा है । इसे संकल्पना संबंध चित्र (कन्सैप्ट मेपिंग) से दिखाया जा सकता है । डेलोर रिपोर्ट में प्रस्तावित अधिगम (लर्निंग) के चारों स्तम्भ - ज्ञान लेना, कार्य कुशल बनना, दूसरों के साथ मिलकर काम करना, और आत्मनिरीक्षण कर श्रेष्ठतर बनना - समेकित अधिगम में समाहित हैं । समेकित अधिगम (होलिस्टिक लर्निंग) के सिद्धान्त के आधार पर सूर्या फाउंडेशन के तत्वावधान में "एक कक्षा-एक किताब" परियोजना के अंतर्गत कक्षा-1 से कक्षा-5 तक की पुस्तकों का प्रणयन कराया है । एक कक्षा में एक ही किताब जिसमें भाषा, विज्ञान, गणित, पर्यावरण, इतिहास, शरीर संरचना, उत्सव आदि की जानकारी रोचक ढंग से दी गई है । समेकित अधिगम की शिक्षण विधा से जीवन पर्यंत ज्ञान पिपासा और सीखने की रुचि प्रबल रहेगी । सतत ज्ञान और कौशल समुन्नति को सुनिश्चित करेंगे ।

अधिगम

प्रत्येक वस्तु, क्रिया, व्यक्ति में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। परिवर्तन निरंतर चलने वाली क्रिया है। परिवर्तन से ही विकास और उन्नति के चरण आगे बढ़ते हैं। व्यक्ति के ज्ञान, व्यवहार आदि में परिवर्तन को अधिगम कहते हैं। यह परिवर्तन अनुभूति तथा अभ्यास के कारण होता है। अभ्यास से उसमें वृद्धि होती है। इससे अधिगम (सीखना) सुगम हो जाता है। ''करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान''। अधिगम सफल जीवन के लिए जरूरी है। यह उसके अभ्युदय का आधार है। ''अधभर गगरी छलकत जात''। अधिगम लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। जब जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति सीखता रहता है तब उसके अधिगम में समग्रता कैसे हो सकती है? समग्रतापूर्ण अधिगम के निकट अवश्य पहुँचा जा सकता है। अधिगम कई प्रकार से परिभाषित है। अधिगम अनुकूलन प्रक्रिया है। सफल जीवन हेतु व्यक्ति की परिस्थितियों के अनुसार ढलना पड़ता है। अधिगम पुराने और नए, अनुभवों का योग है। इनके योग से एक नई सीख बनती है। नया ज्ञान, सूझबूझ, रूचियाँ, दृष्टिकोण आदि विकसित होते हैं। यह नई व्यवस्था (अधिगम) जीवन की मूलभूत प्रक्रिया है। अधिगम किसी

भी दिशा में हो सकता है, लेकिन इच्छित दिशा में हुए अधिगम को समाज में स्वीकारता प्राप्ति होती है। अधिगम का स्त्रोत शिक्षा है। शिक्षा में सीखना अधिगम और सिखाना (शिक्षण) दोनों सम्मिलित हैं। अधिगम और शिक्षा हेतु शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने अधिगम के कई सिद्धांत प्रतिपादित हुए हैं।

शिक्षा

अधिगम और शिक्षण दोनों परस्पर आधारित हैं। इनसे व्यक्ति में मनुष्यता विकसित है। मनुष्यता समाज सम्मत जीवन हेतु लक्ष्य प्रदान करती है। जीवन को अर्थपूर्ण बनाती है। ज्ञान विज्ञान का विकास करती है। यह दोनों कारक अधिगम को समग्र बनाते हैं। फलतः व्यक्ति का समग्र जैसे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, सामाजिक विकास होता है। शिक्षा सीधे तौर पर समग्रतापूर्ण अधिगम की गुणवत्ता से जुड़ी है। गुणवत्ता शब्द का अर्थ दैनिक जीवन में किसी भी विषय, वस्तु या व्यक्ति की बेहतरी आदर्श स्थिति (आशा, वांछित गुण, व्यवहार का उत्तम स्तर) से लगाया जाता है। हमारे सनातनी संस्कारों में आदर्श एक कल्पना सी है। जो औद्योगिकीकरण में और संयुक्त परिवार परम्परा में एक नया रूप ले रही है। बच्चे के समग्रतापूर्ण अधिगम के कई कारक जैसे माता-पिता, घर-परिवार, समाज और मीडिया, विद्यालय, शिक्षक (आचार्य, गुरू, अध्यापक, मास्टर आदि) शिक्षण-सामग्री, सीखे गये अधिगमों की मूल्यांकन विधा, प्रशासनिक एवं प्रबंधकीय व्यवस्था आदि हैं। अधिगम के इन सभी कारकों की समग्रता से समग्रतापूर्ण अधिगम के निकट पहुँचना संभव है।

समग्रतापूर्ण अधिगम में माता-पिता की भागीदारी

बच्चे का प्रथम गुरू उसकी माता है। माता को पृथ्वी से बड़ा बताया गया है। इससे माता की महत्ता स्पष्ट होती है। दूसरा गुरू पिता है। पिता को आकाश से भी बड़ा बताया गया है। बालपन में माता-पिता, घर-परिवार से मिले संस्कारों का जीवनभर प्रभाव रहता है। हमारे संविधान में कुछ वर्ष पहले बच्चे की शिक्षा से संबंधित कर्तव्य जोड़ा गया है। हमारी तो सनातनी नीति रही है। यथा

माता शत्रु पिता बैरी, योनि वालों न पाठतिः न शोभते।

परंतु माता-पिता, घर-परिवार से मिले संस्कारों को मीडिया भी प्रभावित कर देता है। माता-पिता, घर-परिवार, कुटुम्ब आदि समाज-समुदाय के अंग हैं। आज समुदाय विद्यालय प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। माता-पिता और समुदाय के सदस्य बच्चों के वांछित अधिगम के लिए विद्यालयों को जवाबदेह बना सकते हैं।

समग्रतापूर्ण अधिगम में विद्यालय भवन एवं बुनियादी सुविधाओं की भागीदारी

बच्चे के अधिगम विद्यालय भवन एवं बुनियादी सुविधाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। गुणवत्तीय शिक्षा के लिए विद्यालय जरूरी हैं, जिनमें आधुनिक सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हों जैसे बिजली, पानी, बालक-बालिकाओं के लिए पृथक शौचालय, कार्यात्मक-प्रयोगशाला, मध्यान्ह भोजन का समुचित प्रबंध होना आदि। विद्यालय और बच्चे के आवास से आने-जाने का, यातायात का समुचित प्रबंध भी जरूरी है। विद्यालय भवन में शिक्षकों के लिए आवश्यक सुविधाएँ भी बच्चे के समग्रतापूर्ण अधिगम के लिए बहुत जरूरी है। हमारी सरकारें शहरी और ग्रामीण जगत में स्थित विद्यालयों में पाठ्यक्रम, पुस्तकें तथा अन्य सुविधाएँ एक समान करने की कोशिश कर रही हैं।

समग्रता पूर्ण अधिगम में शिक्षक (आचार्य-गुरू-अध्यापक) की भागीदारी

बच्चे का तीसरा गुरू उसका शिक्षक (आचार्य, अध्यापक) है। हमारी कल्पना में उसे 'गोविन्द' से भी उपर बताया गया है। उसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश के रूप में भी प्रतिपादित किया है। शिक्षक, उसकी शिक्षा तथा उसका पूर्ण सेवाकालीन प्रशिक्षण एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण सीधे तौर पर शिक्षा (बच्चे के अधिगम) की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं क्योंकि ये सब अन्योन्याश्रित हैं। शिक्षक से सभी की बहुत सी आकांक्षाएँ होती हैं। बच्चे के प्रति उसकी सकारात्मक सोच अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षा की गुणवत्ता निर्धारित करने वाले कारकों में शिक्षकों का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक उपकरण कितने भी अच्छे हों और कितने भी प्रकार के हों, वे शिक्षक का स्थान कभी नहीं ले सकते। शिक्षक से जो आत्मीयता मिलती है वह कृत्रिम उपकरणों से कैसे संभव है? कृत्रिम उपकरण उतना ही तो कर सकते हैं जितने के लिए वे बनाए जाते हैं। शिक्षा व्यवस्था से जुड़े प्रत्येक भागीदार को शिक्षक शिक्षा और उसके प्रशिक्षण तथा उसकी गरिमा निमित्त यथोचित प्रबंध करना चाहिए। तभी वह बच्चे के समग्रतापूर्ण अधिगम में अपना भरपूर योगदान कर सकेगा।

समेकित पाठ्यचर्या

शिक्षक-शिक्षा-प्रशिक्षण में 'समेकित शिक्षा' की परम आवश्यकता है। ज्ञान खंडों में बंटा हुआ नहीं होता है। Concept Maping समावेशित-समावेशी शिक्षा का एक नवीनतम उदाहरण है और यह पढ़ाई-लिखाई और पठन-पाठन सामग्री की रचना का एक आधुनिक तरीका है। बहुत से Concepts के बीच में संबंध स्थापित करके उसे diagram के माध्यम से दर्शन के तरीके को Concept Maping कहते हैं। Concept Maping के diagram बनाने में टॉपिक से जुड़े विषय और अन्य विषयों में संबंध स्थापित हो जाता है। Concept Maping (Integrated-समेकित रूप में) का अधिगम शिक्षण सामग्री के बनाने में तथा शिक्षण में उपयोग किया जाता है। समग्रतापूर्ण अधिगम हेतु उपयोग किया जाना परमावश्यक है। समग्रतापूर्ण अधिगम के लिए वांछित ज्ञान को समग्र रूप से समेटना भी जरूरी है।

समग्रतापूर्ण अधिगम के लिए पठन-पाठन सामग्री की रचना

शिक्षा व्यवस्था में मोटे तौर पर चिंतन-मनन के बिंदु होते हैं - किसको शिक्षित करें, कौन शिक्षा प्रदान करे, शिक्षित करने के तौर-तरीके क्या हों, कहाँ-कहाँ शिक्षा दें, शिक्षा निमित्त पठन-पाठन सामग्री कैसी हो, शिक्षण पठन-पाठन सामग्री कौन बनाए, पढ़ाई-लिखाई पर निवेश कौन करे, इन सबका प्रबंधन कौन करे/ कहने का तात्पर्य है कि शिक्षा व्यवस्था में बच्चे के समग्रतापूर्ण अधिगम के लिए माता-पिता, अभिभावक, घर परिवार, समाज, समुदाय, विद्यालय शिक्षाविद, राष्ट्र, ऋषि-मुनि, नीति निर्धारक (वर्तमान में दोनों सदनों के सांसद) आदि हैं। पठन-पाठन शिक्षण आदि सामग्री की रचना के लिए अनेक सिद्धांत, विधि विधाएँ हैं। भिन्न-भिन्न संस्थाएँ पठन-पाठन सामग्री की रचना में कार्यरत हैं।

सूर्या फाउण्डेशन, नई दिल्ली ने समग्रतापूर्ण अधिगम निमित्त 'एक कक्षा-एक किताब' परियोजना चलाई है। इसके अंतर्गत कक्षा एक से लेकर कक्षा पाँच तक के लिए सूर्य भारती प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचम प्रकाशित की हैं। ये पुस्तकें समेकित करके तथा Concept Maping दर्शन पर आधारित हैं। पुस्तकों की रचना किसी एक विशेषज्ञ द्वारा न होकर, विशेषज्ञों की एक टोली ने की

है। टोली में स्कूल शिक्षा थिंक-टैंक के सदस्य, समय-समय पर आमंत्रित शिक्षाशास्त्री, शिक्षाविद्, भाषा, गणित, सामाजिक-विज्ञान, स्वास्थ्य, चित्रकला, कार्यानुभव, संगीत, व्यायाम, योग आदि के विशेषज्ञ, शिक्षण-प्रशिक्षण आचार्य, अध्यापक, संपादक, आर्टिस्ट, सूर्या फाउण्डेशन की रिसर्च टीम तथा पुस्तकों के उपयोगकर्त्ता सम्मिलित हैं।

सूर्य भारती पुस्तकों में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, गणित, परिवेश अध्ययन, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, जीवन जीने की कलाएँ, जीवन मूल्य और पाठ्यक्रमेतर पठन-पाठन सामग्री को समेकित किया गया है। पाठ में पाठ्य सामग्री, चित्र, ये भी सिखाइए, अभ्यास, सुलेख लिखना आदि समाहित हैं। पुस्तकों में समाज सुधारक, शिक्षाविद, साहसी वीर बालक-बालिकाएँ, प्रेरणा के स्त्रोत, छोटे बच्चे बड़े काम, छोटी सी गलती से बड़ा नुकसान, योग, खेल, नृत्य, संगीत, बुद्धिबल आदि के पाठ है। महान वैज्ञानिकों के जीवन की महत्वपूर्ण एवं रोचक घटनाओं का भी वर्णन किया है। प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकंप, बवंडर, तूफान, बाढ़ आदि से संबंधित जानकारी भी दी गई है। कक्षा तीन तक गृहकार्य नहीं दिया गया है। सीखने वाला (अधिगमकर्ता) - समग्रतापूर्ण अधिगम महत्वपूर्ण भागीदार सीखने वाला है। यदि उपर्युक्त वर्णित सभी कारक उत्तम कोटि के हों और सीखने वाला जिज्ञासु न हो, सीखना न चाहे तब क्या?

काक चेष्टा वको ध्यानं श्वान निद्रा तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी, विद्यार्थी पंचलक्षणम्।।

एवं सुखार्थी कुतो विद्या विद्यार्थी कुतो सुखं।

ये हमारा आदर्श है। सुबह उठें, माता-पिता के चरण स्पर्श करें, स्नान करें, जलपान करें। पढ़ने के लिए जायें, पढ़ाई-लिखाई मन से करें, बड़ों का कहना मानें आदि पर इन सब में शिथिलता नजर आ रही है। टेलीविजन, मोबाइल आदि ने दिनचर्या बदल दी है। विद्यार्थी से हम सब बातों की अपेक्षा करते हैं, हम सब भी तो आदर्श की ओर और उस जैसा व्यवहार करें। समग्रतापूर्ण अधिगम के लिए हम सबको अपने कर्तव्यों पर खरा उतरना होगा।

CURRICULAR TRENDS : INTEGRATED CURRICULUM – CONCEPT MAPPING

The subject centred curriculum is the oldest prevailing form of organising a curriculum, as subjects constitute a logical and effective method of organising new knowledge and therefore an effective method of learning it. The criticism of the conventional subject curriculum gave rise to the activity or experience curriculum as people learn only what they experience only that learning which is related to active purposes. It is rooted in experience and translate itself into behaviour changes.

The Subject centred design of curriculum gave rise to another design of curriculum – Broad Fields, curriculum – topics (Themes) such as protecting Life and Health, Getting a Living, Making a House, Transport and Communication understand ourselves and soon. Be that is it may.

The main areas relevant for curricular planning have remained remarkably stable for a long time. The National Curriculum Framework (NCERT) 2000 suggested to different alternative strategies – 'an Integrated Curriculum'. In Surya Foundation, we developed and an Integrated Curriculum for solemnly schoolwise..

सूर्य भारती प्रथम (पाठ वीर बालक भरत)

पाठ में समाहित विषय - 1. भाषा, 2. गणित, 3. विज्ञान, 4. सामाजिक विज्ञान, 5. स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, 6. कार्य शिक्षा, 7. कला शिक्षा।

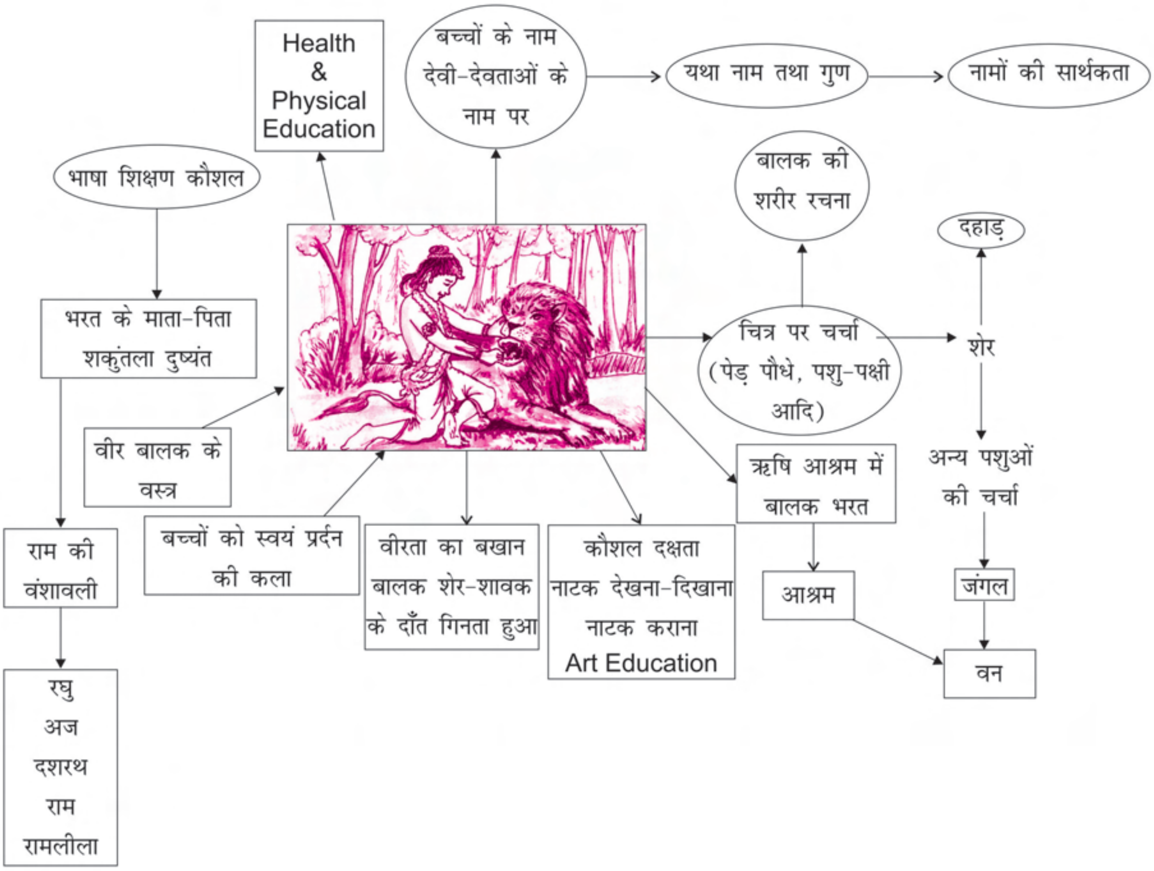

चित्र : संकल्पना सम्बन्ध चित्रण (कान्सेप्ट मैपिंग)